IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, April 2026 Impact Factor: 8.2

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. दास स्वामी रामसुख, (संवत 2061), गीता प्रबोधनी,गीता प्रेस गोरखपुर
2. गोयंदका जयदयाल, (सन 2002), गीता तत्वविवेचनी, गीता प्रेस गोरखपुर
3. गौड़ डा॰ अक्षय, (सन 2015), श्रीमद्भगवद्गीता, ड्रोलिया पुस्तक भण्डार हरिद्वार
4. शर्मा डा॰ सुरेशचन्द्र, (सन2016),व्यक्तित्व विकास और भगवद्गीता मंजुल पब्लिशिंग हाउस
5. दशोरा नन्दलाल, (सन 2018),पातंजल योगसूत्र, रणधीर प्रकाशन हरिद्वार
6. नौटियाल डा॰ विनोद प्रसाद, (सन 2016), योगदर्शन, किताब महल दिल्ली
7. गोयंदका हरीकृष्णदास, (संवत 2072),योग–दर्शन, गीता प्रेस गोरखपुर
8. भावे विनोवा, (सन 2019), गीता प्रवचन, सर्वसेवा संघ प्रकाशन वाराणसी
9. मुण्डकोपनिषद्–गीताप्रेस, गोरखपुर
10. swww.jivavamrat.in
11. www.jivan.wordpress.com
12. https://sa.wikisource.org/s/kty

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, April 2026 Impact Factor: 8.2

हे अर्जुन! जो पुरूष केवल मेरे ही लिये संपूर्ण कर्तव्य कर्मो को करने वाला है, मेरे परायण हैं, मेरा भक्त है, आसक्ति रहित है और संपूर्ण भूतप्राणियों में वैरभाव से रहित है, वह अनन्य भक्ति पूर्वक पुरूष मुझको ही प्राप्त होता है।

भारतीय राजनीति में वसुधैव कुटुंबकम् भाव है कि महोपनिषद् की कविता भारत की संसद के प्रवेश द्वारा हाल में उत्कीर्ण है कि–''दुनिया एक परिवार है।''

स्वामी विवेकानंद भारतीय दर्शन, धर्म, संस्कृति, देश प्रेम और विश्व बंधुत्व की जीवंत प्रतिमा थे, जिन्होंने विश्व में गहन आध्यात्किता और मानव मूल्यों के भारतीय दर्शन की स्थापना की।

वसुधैव कुटुंबकम् का दर्शन मानवता की दृष्टि से बड़ा ही व्यापक है। यह एक आध्यात्मिक समझ ही है कि पूरा ''विश्व एक परिवार है।'' प्राचीन भारत में वेदों, उपनिषदों, ऋषियों और बुद्ध आदि संतो का आपसी प्रेम, विश्वास और दोस्ती का परिणाम ही है कि एक आध्यात्म रूपी धागे में पूरी दुनिया के लोगों को बॉधने का सपना देखा है। वे प्राचीन भारत में काफी हद तक इसमें सफलता प्राप्त की है। यह केवल योग और ध्यान के माध्यम से संभव हो पाया है।

महोपनिषद् में कहा गया है–

अयं बन्धुरयं नेति गणना लघुचतसां।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुंबकम्।।[6]

अर्थात् केवल छोटे पुरूषों कह भेद–भाव एक–एक रिश्तेदार हैं अन्य एक अजनवी है। जिन लोगों ने उदारता से जीने के लिए पूरी दुनिया का गठन किया, लेकिन एक परिवार है।

उपसंहार : आज तक संसार में गीता जैसा कोई ग्रंथ नहीं पाया गया है। इसमें पूर्वी एवं पाश्चात् सभ्यता दोनों ही इसे अपूर्व ज्ञान का भण्डार माना है। श्रीमद्भगवत्गीता की विचारधारा का मनुष्य जीवन में अपना एक महत्व है। जिसका ज्ञान भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन को विशेष परिस्थिति में युद्ध के मैदान में दिया था।

जीवन की कृतार्थता के लिए, पूर्ण आचार निष्ठ, संयत और साधु जीवन प्राप्ति में यत्नशील होना ही योग साधना का मुख्य लक्ष्य है। इसके लिए शास्त्रीय दृष्टि और शास्त्रों में श्रृद्धा होना परमावश्यक है। केवल ग्रंथाभ्यास से शास्त्रों का पढ़ना पूर्णतः सार्थक नहीं है। शास्त्रों को पढ़कर यदि हृदय में तत्वज्ञान की प्राप्ति के लिए उत्साह पैदा न हो, ज्ञान और भक्ति की प्राप्ति के लिए मन में चेष्टा न हो, तो उस शास्त्र का अध्ययन निरर्थक ही है। इसलिए आत्मा को जानने, परमात्मा के साक्षात्कार के लिए, आध्यात्मिक उन्नति एवं तत्वदर्शन की खोज में श्रीमद्भगवत्गीता में वर्णित योग का विशेष महत्व है।

इसीलिए परमात्मा आत्मा को सशक्त बनाने वाला कारगर सर्व सुलभ एवं सार्थक योग सिखाते हैं क्योंकि आत्मा तन में शक्ति भर देती है और आत्मा करने योग्य श्रेष्ठ कर्म हर कीमत पर दृढ़ता पूर्वक करती है और न करने योग्य कर्म आत्मा किसी भी प्रलोभन में आकर नहीं करती है। उसके कर्मो में सद्विवेक, पवित्रता, शांति, प्रेम, सुख, आनंद एवं शक्ति झलकती है। इसीलिए उसका हर कर्म श्रेष्ठ व महान बन जाता है। उसके जीवन व्यवहार में सर्वांगींण संतुलन दिखाई देने लगता है। यही भाव मनुष्य को राष्ट निर्माण हेतु शक्ति प्रदान करती है।

6 e-mi-&6@72

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, April 2026 Impact Factor: 8.2

सभी एकमत हैं कि योग किसी विशेष मत, संप्रदाय, जाति, वर्ग, धर्म से संबंधित नहीं है अपितु यह योग विधा सार्वभौमिक, सार्वकालिक तथा सार्वजनीय दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यह ऋषि–संस्कृति का ही नहीं अपितु संपूर्ण भारतीय धर्म, अध्यात्म, संस्कृति, दर्शन, परंपराओं का प्राणरूप है। जिसके ज्ञान एवं अभ्यास से मानव के मानस में निहित संपूर्ण जिज्ञासाओं, शंकाओं, समस्याओं और प्रश्नों का एकमात्र समाधान है। इसलिए इस दिव्य ज्ञान से समस्त मानव जाति को परिचित होना चाहिये। कम से कम भारत वर्ष के प्रत्येक बालक, युवा, प्रौढ़, वृद्ध सभी स्त्री–पुरूष को योग रूपी ज्ञान से युक्त होना चाहिये।

गीता में वर्णित योग के अभ्यास से शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करके व्यक्ति का सर्वांगींण विकास करके सभी प्रकार की आधि–व्याधि को जीवन से दूर करके जीवन के उन्नत शिखर में पहुँचाना है। योग शनैः–शनैः प्रत्येक व्यक्ति, परिवार, गली, गॉव, शहर, देश और संपूर्ण विश्व को अपने दिव्य प्रकाश से प्रकाशित कर रहा है। आज देश के स्कूलों व कॉलेजों में योग के अध्ययन एवं अध्यापन का कार्य बड़े जोर–शोर से संचालित हो रहा है।

मानवी प्रगति में बुद्धि की प्रधानता को कारण समझाा जाता है, पर वस्तुतः महिमा सहकारिता की है। कुटुंब बनाकर रहने और समाज व्यवस्था अपनाने से ही उसके इस स्तर तक पहुँचने में सफलता पाई है, जिससे वह सृष्टि का मुकुटमणि समझा जा सके। भौतिक–आत्मिक प्रगति का सारा रहस्य मिल–जुलकर रहने की पद्धति में सन्निहित है। इसी सत्प्रवृत्ति को जीवनयापन के हर क्षेत्र में विकसित करना पारिवारिकता है। इसी का विकसित रूप समाजवाद एवं साम्यवाद है। अध्यात्म दर्शन भी इसी आस्थाा पर आधारित है। ''वसुधैव कुटुंबकम्'' का सिद्धान्त समस्त मानव समाज को प्राणिमात्र की आत्मीयता के सूत्र में बॉधता है और संयुक्त रूप से प्रगति करने तथा मिल बॉटकर खाने की प्रेरणा देता है।

भारतीय संस्कृति की आत्मा योग है अतः जिस जिज्ञासुजन को भारतीय संस्कृति को जानना है उसे सर्वप्रथम योग के सत्य स्वरूप को जानना परमावश्यक है। क्योंकि हमारे प्राचीन ऋषियों ने योग के निर्विकल्प सत्य पर आधारित रूप का प्रतिपादन किया है। योग का अंतिम उद्देश्य भी आत्म साक्षात्कार करना एवं कैवल्य की प्राप्ति करना है। जो कि विश्व कल्याण के लिए परमावश्यक है। इसी योग रूपी फल से समूचे विश्व में एकत्व की भावना विकसित होगी।

महर्षि पतंजलि योगसूत्र में चित्त को निर्मल बनाने का सुगम मार्ग बताया है–

''मैत्रीकरूणामुदितोपेक्षाणांसुखदुःखपुण्यापुण्यविषयाणां
भवनातश्चित्तप्रसादनम्।।'' [4]

अर्थात् सुखी मनुष्यों से मित्रता की भावना करने से, दुःखी मनुष्यों में दया की भावना करने से, पुण्यात्मा पुरूषों में प्रसन्नता की भावना करने से और पापियों में उपेक्षा की भावना करने से चित्त के राग, द्वेष, घृणा, ईर्ष्या और क्रोध आदि मलों का नाश होकर चित्त निर्मल हो जाता है।

गीता में भी कहा गया है –

मत्कर्मकृन्मत्परमो मश्दक्तः संग्ङवर्जितः।
निर्वैरः सर्वभूतेष्ु यः स मामेति पाण्डव।। [5]

---

4 ;ksxlw=&1@33
5 xhrk&11@55

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, April 2026 Impact Factor: 8.2

दिखाई दे रहा है उसमें निम्नलिखित उक्तियॉं साकार करने में हमारे राजनीतिज्ञ शतप्रतिशत् सफल हो चुके हैं जो निम्नलिखि हैं–

- भ्रष्टाचार प्रधान कर्म विश्व करि राखा, जो जस भ्रष्ट होंहिं तसहि सुफल चाखा।
- मतदाता वन का गिद्धड़ जायेगा किधर, जिसे भी चुने बेईमान को ही चुनेगा।
- सकल पदारथ यहि जग माहीं, नैतिकवान मानव कुछ पावत नाहीं।

किसान, मजदूर तथा गैर कृषि मजदूर, आदिकाल से ही धनोत्पादन का कार्य पूरी निष्ठा तथा ईमानदारी से ही करते आ रहे हैं। परन्तु इनके पास आज तक धन संग्रह हो ही नहीं पाया है। इन धनोत्पादक वर्गो के वंशों को सुनियोजित तरीकों से ही बेरोजगार बनाया जा रहा है ताकि न्यनतम मजदूरियों पर ही परिश्रम करने के लिए विवश बने रहें।

बेरोजगार युवक–युवती ही आतंकवादी, नक्सली तथा अलगाववादी बने रहे हैं। मरता क्या नहीं करता। उनके पास जीवित रहने के लिए कोई सार्थक विकल्प ही नहीं दिखाई पड़ रहा है। भारतीय संविधान की उद्देशिका को पूर्ण करने एवं वसुधैव कुटुम्बकम् के लक्ष्य को स्थापित करने की ओर हम भारतीयो को अग्रसर होंना होगा।

वसुधैव कुटुम्बकम् अर्थात् ''वसुधा'' पृथ्वी है और ''कुटुम्बकम्'' परिवार से वसुधैव कुटुम्बकम् एक संस्कृत वाक्यांश है जिसका मतलब यह है कि पूरी दुनिया एक ही परिवार है।[1] इस भाव के लिए गीता में श्रीकृष्ण बार–बार मन स्थिर करने को कहते हैं जिसके निरंतर अभ्यास से वह कर्तव्यपरायण, सक्रिय, स्फूर्तिशील और आशावादी बनता है। गीता में कहा गया है –

तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिकः।
कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुन।। [2]

योगी तपस्वियों से श्रेष्ठ है, शास्त्र ज्ञानियों से भी श्रेष्ठ माना गया है और सकाम कर्म करने वालों से भी योग श्रेष्ठ है, इसलिए हे अर्जुन! तुम योगी हो।

योगिनामपि सर्वेशां मद्गतेनान्तरात्मना।
श्रद्धावान्भजते यो मां स मे युक्ततमो मतः।। [3]

संपूर्ण योगियों में भी जो श्रद्धावान् योगी मुझमें लगे हुए अन्तरात्मा से मुझकों निरन्तर भजता है, वह योगी मुझे परम श्रेष्ठ मान्य है। यह भाव ही राष्ट निर्माण का मुख्य आधार है।

योग से 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के भाव :

आधुनिक युग में योग को अत्यधिक व्यवहारिक तथा अनुकरणीय बनाने एवं मानवों में योग के प्रति अत्यधिक रूचि जाग्रत करने के लिए ही श्रीमद्भगवतगीता के योग को अपनाना ही होगा। जो ज्ञान, योग, अध्यात्मवाद की एक अद्भुत एवं सुन्दर रचना मानी गई है, यह ग्रन्थ ब्रह्मविद्या व योगशास्त्र दोनों ही हैं। योग हमारे ऋषियों की सर्वोत्कृष्ट व जन कल्याणकारी खोज और विरासत है, जिसमें जीवन व जगत से संबंधित समस्त समस्याओं का पूर्ण समाधान सन्निहित है। 21वीं सदी में आज 'योग' जन–जन की जिह्वा पर विद्यमान है। योग आज संपूर्ण विश्व को सूर्य की भॉति प्रकाशित कर रहा है।

---

[1] https://sa.wikisource.org/s/kty
2 xhrk&6@46
3 xhrk&6@47

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, April 2026 Impact Factor: 8.2

भारतीय संस्कृति में वसुधैव कुटुम्बकम तथा योग : एक अनुशीलन

नीलम रानी, शोधार्थी, योग विज्ञान विभाग, मोनाड विश्वविद्यालय हापुड, उतर प्रदेश
डॉ. रवि दुबे, सहायक आचार्य योग विज्ञान विभाग, मोनाड विश्वविद्यालय हापुड, उतर प्रदेश

शोध–सार : भारतीय संस्कृति एक ऐसी विश्व संस्कृति है, जो मनुष्य को सच्चे अर्थो में मनुष्य बनाने की क्षमता से ओत–प्रोत है। वह उच्चस्तरीय विचारण जिससे व्यक्ति अपने आप में संतोष और उल्लास भी अंतःस्थिति पाकर सुख और शांति से भरा–पूरा जीवन जी सके, भारतीय तत्वज्ञान में कूट–कूटकर भरी है। वह आदर्शवादी, कियापद्धति, जो सामूहिक जीवन में आत्मीयता, उदारता, सेवा, स्नेह–भावना, सहिष्णुता और सहकारिता का वातावरण उत्पन्न करती है, भारतीय संस्कृति–शिक्षण की मूल धारा है। इस महान तत्वज्ञान का अवगाहन, भारतीय प्रजा चिरकाल तक करती रही और उसके फलितार्थ इस रूप में सामने आये कि यहाँ के नागरिकों को समस्त संसार में देव पुरूष कहा गया और जिस भूमि में ऐसे महामानव उत्पन्न होते हैं, उसे स्वर्ग के नाम से सम्बोधित किया गया।

मुख्य बिन्दु : राष्ट निर्माण, वसुधैव कुटुम्बकम्, भारतीय संस्कृति तथा श्रीमदभगवतगीता।

प्रस्तावना : गीता भारतीय आध्यात्मिक ग्रंथों में महत्वपूर्ण ग्रंथ माना जाता है। गीता संसार का प्रसिद्ध ग्रंथ है। गीता में सभी प्रकार की विधायें विद्यमान हैं। इसमें वर्णित भाव वसुधैव कुटुम्बकम्, जो कि प्राचीन भारतीय सनातन धर्म के अनुयायियों की मूल संस्कार तथा विचारधारा है। जो मोक्षदायी योग्यता धारण करने वाला है। संपूर्ण पृथ्वी के मानवों को अपना एक परिवार मानना तथा सुख–दुःख में सम्मिलित होना ही वसुधैव कुटुम्बकम् का मूल स्वरूप है। जिसमें आतंकवाद, अलगाववाद, नक्सली, माववबम, बेरोजगारी, अभावग्रस्तता तथा गरीबी सहित कोई भी मानव निर्मित भौतिक समस्या विश्व में नहीं हो।

भारतीय संविधान में वसुधैव कुटुम्बकम् शब्द का उल्लेख संविधान में नहीं किया गया है। फिर भी भारतीय संविधान वसुधैव कुटुम्बकम् को ही स्थापित करने वाला है। यानि रामराज्य रुपी समाजिक परंपरायें स्थापित करने वाली है। काश! व्यवहारिक रूपों से रामराज्य को स्थापित करने के लिए निश्पक्षता से कानूनों को निर्मित किया गया होता। तो निःसंदेह भारत में तुष्टिकरण की नीतियों तथा फूट डालो शासन करो की नीतियों का कार्यरत नहीं किया गया होता। कोई भी ऐय्याशी करने वाली तथा हवश मिटाने वाली मानवता वसुधैव कुटुम्बकम् को स्थापित करने के योग्य होती ही नहीं।

विधिमान्य परिश्रमों के लिए जब तक न्यायोचित मजदूरी तथा वेतन आदि, को निर्धारित कर व्यवहारिक रूपों से प्राप्त नहीं कराया जायेगा। तब तक भारतीय संविधान की उद्देशिका को साकार करने की ओर हम भारतीय अग्रसर नहीं हो सकेंगे। भारत में कालाधन अर्जित करने की प्रतियोगिता को विधिवत स्थापित करया जा चुका है। फलस्वरूप व्यवहारिक रूपों में कोई मानवात्मा ईमानदार तथा नैतिकवान भी हैं। ऐसी अपेक्षा नहीं की जा सकती है। भारतीय चुनावों में राजनैतिक दलों द्वारा उम्मीदवारों को कालाधन से खरीदे जा रहे हैं। कालाधन चुनाव में व्यय करे जा रहे हैं। तो ऐसे राजनैतिक दलों तथा राजनीतिज्ञों से वसुधैव कुटुम्बकम् को स्थापित करने की आशा करना मूर्खता ही है। वर्तमान भारत में जो समाज इन ऑखों से

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/568